International Journal of Enhanced Research in Management & Computer Applications
ISSN: 2319-7471, Vol. 4 Issue 9, September-2015

महात्मा गांधीजी की भारत छोड़ो आंदोलन में भूमिका

प्रवेश
Lecturer History (Guest Faculty), GGSSS, Akehri Madanpur, Jhajjar

सारांश

भारत छोड़ो आंदोलन में महात्मा गांधी का योगदान अतुलनीय है। उन्होंने अपने जीवन में सत्य, अहिंसा और सच्चाई के रास्ते पर चलकर एक ऐसा आंदोलन खड़ा कर दिया। जिसके आगे अंग्रेज भाग खड़े हुए। आज उन्हीं के प्रयासों से ही हम स्वतंत्र जीवन जी रहे हैं।

परिचय

महात्मा गांधी ने अपना संपूर्ण जीवन भारत एवं भारतवासियों के लिए न्यौछावर कर दिया। उनकी भूमिका अत्यंत सशक्त एवं महत्वपूर्ण रही। गांधी को हर विचारधारा व हर वर्ग की आलोचना मिलने के बावजूद उन्होंने जन नायक बनकर राष्ट्रीय आंदोलन को जन-जन तक पहुंचाया और महात्मा बनकर उभरे।

9 अगस्त 1925 को ब्रिटिश सरकार का तख्ता पलटने के उद्देश्य से क्रांतिकारी बिस्मिल के नेतृत्व में हिंदुस्तान प्रजातंत्र संघ के दस जुझारू कार्यकताओं ने काकोरी कांड को अंजाम दिया था। इसकी यादगार ताजा रखने के लिए पूरे देश में प्रतिवर्ष 9 अगस्त को 'काकोरी कांड स्मृति-दिवस' मनाने की परंपरा शहीद भगत सिंह ने शुरू कर दी थी और इस दिन बहुत बड़ी संख्या में नौजवान एकत्र होते थे। गांधी जी ने एक सोची-समझी रणनीति के तहत 9 अगस्त 1942 का दिन चुना था।

भारत छोड़ो आंदोलन

गांधीजी ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद का रक्तहीन अंत कर एक नए युग की आकांक्षा रखी थी। देश में व्याप्त हताशा, निराशा से गांधीजी चिंतित हुए और वे जनता में पुन: राष्ट्रीय आंदोलन की गति बढ़ाने पर मंथन करने लगे। गांधीजी ने हरिजन में लिखा कि "भारत को ईश्वर के भरोसे छोड़ कर चले जाओ और यदि यह अधिक हो तो

उसे अराजकता की स्थिति में छोड़ दो" । 1942 ई. में गांधीजी ने 'भारत छोड़ो आंदोलन चलाया। उन्होंने उद्घोष किया – "अंग्रेजों भारत छोड़ो" । आन्दोलन चलाए जाने के कारण गांधीजी द्वारा भारत छोड़ो आंदोलन चलाने के निम्नलिखित कारण थे –

(1) क्रिप्स मिशन की असफलता – क्रिप्स मिशन की असफलता से यह स्पष्ट हो गया कि अंग्रेजों का लक्ष्य भारत को स्वतंत्र करने का नहीं है। विश्व जनमत को अपने पक्ष में लाने के लिए अंग्रेजों ने इस नाटकीय स्वांग का प्रदर्शन किया था। प्रसिद्ध राजनीतिक विचारक लास्की ने भी स्पष्ट रूप से लिखा था कि चर्चिल की सरकार ने सर स्टेफर्ड क्रिप्स को भारत की समस्या का हल करने के लिए सच्चे इरादे से नहीं भेजा था।असली विचार भारत को स्वाधीनता देना नहीं, बल्कि मित्र राष्ट्रों की आँखों में धूल झोंकना था।

(2) जापान के आक्रमण का भय - द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जापान की सेना निरंतर आगे बढ़ रही थी इससे भारतीय प्रदेशों को भी खतरा उत्पन्न हो गया था। गांधीजी ने यह अनुभव किया कि हम भारत की सुरक्षा तभी कर सकते हैं जब अंग्रेज भारत छोड़ देंगे। उनका कहना था कि "अंग्रेंजों, भारत को जापान के लिए मत छोड़ो। भारत को भारतीयों के लिए व्यवस्थित रूप में छोड़ जाओ" ।

ब्रिटिश सरकार जापान की सेनाओं का मुकाबला करने में असफल रही। मलाया, सिंगापुर, तथा बर्मा में अंग्रेजों की पराजय हुई, भारतीयों को विश्वास हो गया कि ब्रिटेन भारत की रक्षा नहीं कर सकते ।

3. आर्थिक असंतोष – देश की असंतोषजनक आर्थिक स्थिति ने भी महात्मा गांधी को भारत छोड़ो आंदोलन चलाने के लिए बाध्य किया।देश में महँगाई बहुत तेजी से बढ़ रही थी, जिससे आम जनता का जीवन दूभर हो गया था। देश की दयनीय स्थिति के लिए गांधीजी ने अंग्रेज सरकार को जिम्मेदार माना।

4. बर्मा में भारतीयों के साथ भेदभाव – बर्मा में रह रहे भारतीयों के साथ अंग्रेज दुर्व्यवहार करते थे।बर्मा से आने वाले भारतीय शरणार्थियों के साथ पशुवत व्यवहार किया जा रहा था।उनको पृथक तथा कष्टदायक रास्ते दिए गए थे। गांधीजी ने 1942 में लिखा था, "भारतीय और यूरोपीय शरणार्थियों के व्यवहार में जो भेद किया जा रहा है और सेनाओं का जो बुरा व्यवहार है उससे अंग्रेजों के इरादों और घोषणाओं की तरफ अविश्वास बढ़ रहा है" ।

5. पूर्वी बंगाल में आतंक का राज्य – पूर्वी बंगाल में बहुत से लोगों को बिना मुआवजा दिए उनकी जमीनों से वंचित किया गया।सेना के लिए किसानों के घर जबरदस्ती खाली करवाए गए, जिससे भारतीयों में असंतोष फैला।

6. अंग्रेजों के विरुद्ध वातावरण – देश का तत्कालीन वातावरण अंग्रेजों के विरुद्ध था। 27 जुलाई, 1942 को अंग्रेजी सरकार ने लंदन के एक ब्राडकास्ट में यह घोषित किया कि भारत को युद्ध का आधार बनाया जायेगा और इसके लिए सभी सम्भव एवं आवश्यक कारवाई की जाएगी। इससे अंग्रेजों का ध्येय और स्पष्ट हो गया। ऐसी स्थिति में कांग्रेस ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में 'भारत छोड़ो आंदोलन' आरम्भ करने का निश्चय किया।

27 अप्रैल 1942 को कांग्रेस कार्यसमिति की एक बैठक इलाहाबाद में हुई। उस बैठक में सरकारी नीतियों की आलोचना की गई, और वर्तमान परिस्थितियों में युद्ध में इंग्लैंड की सहायता नहीं करने की बात की गई। गांधीजी ने कहा कि भारत की समस्या का एक मात्र निदान अंग्रेजों द्वारा भारत छोड़ो आंदोलन में है क्योंकि ब्रिटेन भारत की रक्षा करने में असमर्थ है। यदि जापान भारत पर आक्रमण करता है तो उसका सामना भी अहिंसात्मक तरीके से किया जायेगा।

कांग्रेस का वर्धा प्रस्ताव – जुलाई 1942 ई. में वर्धा में कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक हुई। बैठक में गांधी के विचारों का समर्थन किया गया और एक प्रस्ताव द्वारा अंग्रेजों से भारत छोड़ने की मांग की गई। इस प्रकार वर्धा प्रस्ताव में यह स्पष्ट कर दिया गया कि यदि ब्रिटिश सरकार भारत में अपने साम्राज्य का अंत कर दे तो कांग्रेस ब्रिटिश सरकार एवं मित्र राष्ट्रों को उनके युद्ध प्रयत्न में सहयोग देगी। इसके विपरीत यदि ब्रिटेन भारत को स्वतंत्र करने के लिए तैयार नहीं हुआ तो गांधी के नेतृत्व में स्वराज प्राप्ति के लिए अहिंसात्मक संघर्ष प्रारम्भ कर दिया जाएगा।

भारत छोड़ो प्रस्ताव – 7 अगस्त, 1942 को मुम्बई में कांग्रेस का अधिवेशन प्रारम्भ हुआ।महात्मा गांधी ने समिति के समक्ष 8 अगस्त को भारत छोड़ो का अपना ऐतिहासिक प्रस्ताव पेश किया। उस प्रस्ताव में कहा गया कि भारत में ब्रिटिश शासन का तात्कालिक अंत मित्र राष्ट्रों के आदर्शों की पूर्ति के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसी पर युद्ध का भविष्य, स्वतंत्रता तथा प्रजातंत्र की सफलता निर्भर है। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने पूरे आग्रह के साथ ब्रिटिश सत्ता को हटा लिए जाने की मांग की है। कांग्रेस के इसी अधिवेशन में महात्मा गांधी ने 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' का नारा बुलंद किया तथा देश को करो या मरो का संदेश दिया। महात्मा गान्धी ने 140 मिनट के अपने लम्बे भाषण में कहा, "मैं फौरन आजादी चाहता हूँ, आज रात को ही, कल सवेरे से पहले आजादी चाहता हूँ।" महात्मा गांधी के उस भाषण पर टिप्पणी करते हुए इंद्र विद्यावाचस्पति ने लिखा है कि "गांधी उस रात ऐसे बोल रहे थे, मानो उनकी अंतरात्मा से भगवान बोल रहा हो" । पट्टाभि सीता रमैय्या ने भी कहा है कि "गांधीजी उस दिन एक अवतार एवं पैगम्बर की प्रेरक शक्ति से प्रेरित होकर बोल रहे थे। उनके अंदर ज्वाला धधक रही थी।

गांधीजी मानवता, विश्वव्यापी भ्रातृत्व, शांति एवं मानव मात्र के प्रति सद्भाव से प्रेरित होकर विश्वलोक की चर्चा कर रहे थे"।

गांधीजी ने अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक में 13 सूत्रीय कार्यक्रम रखे -

1.सारे देश में हड़ताल शांतिपूर्वक चलाई जाए। यह गांधीजी तथा कांग्रेस के अन्य नेताओं को बंदी बनाए जाने के विरोध में होगी।

2.सभी गाँवों तथा शहरों में कांग्रेस का भारत छोड़ो संदेश पहुँचाने के लिए सभाएँ होगीं।

3.नमक हमारे जीवन की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। इसके बनाने पर किसी भी प्रकार की रोक का भारतीय विरोध करेंगे।

4.देश भर में अहिंसात्मक तथा असहयोग आंदोलन चलाना है।

5.विद्यार्थी देश की स्वतंत्रता के लिए स्कूल, कॉलेजों को छोड़कर असहयोग आंदोलन शुरू करेंगे। नेताओं के बंदी बनाये जाने पर उनका स्थान विद्यार्थी लेंगे।

6.सरकारी कर्मचारी नौकरी छोड़ दें। जो त्यागपत्र नहीं देना चाहते, वे सरकारी आज्ञा का उल्लंघन करेंगे।

7.सेना का प्रत्येक फौजी अपने को पहले कांग्रेसी समझे तथा ऐसे सभी आदेशों का उल्लंघन करे जो उसकी आत्मा को कष्ट पहुँचाये।

8.भारत की देशी रियासतों के राजा-महाराजाओं को भी स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेना चाहिए।

9.स्त्रियों को अहिंसात्मक आंदोलन में भाग लेने पर जोर दिया जाये।

10.प्रत्येक स्त्री और पुरुष 'करो या मरो' का नारा अपने जीवन का उद्देश्य बना ले। इससे प्रत्येक व्यक्ति में स्वतंत्रता या इसके संघर्ष में बलिदान देने की भावना प्रबल हो जाएगी।

11.सभी हिंदू, मुसलमान, सिख, पारसी तथा ईसाई इस आंदोलन के भाग हैं।

12. गांधीजी के बंदी बनाये जाने के बाद प्रत्येक भारतीय स्वयं आंदोलन का नेतृत्व करें।

13. लोग चरखा चलायें। इससे स्वतंत्रता आंदोलन को मजबूती प्रदान होगी।

नेताओं की गिरफ्तारी

8 अगस्त के प्रस्ताव और गांधीजी के भाषण से स्पष्ट था कि कांग्रेस आजादी प्राप्ति के लिए आंदोलन करने को कटिबद्ध थी। 8 अगस्त को भारत छोड़ो प्रस्ताव पास हुआ। 9 अगस्त को महात्मा गांधी सहित सभी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। गांधीजी को आगा खाँ महल में कैद रखा गया और अन्य नेताओं को अहमदनगर किले में ले जाया गया। गिरफ्तारी की बात गुप्त रखी गयी। देश भर में कांग्रेस कार्यकर्ताओं पर पुलिस का पहरा बैठा दिया गया।

आन्दोलन का प्रारम्भ

अपने प्रिय नेताओं की गिरफ्तारी का समाचार सुन जनता अधीर हो उठी। कांग्रेस को गैर कानूनी संगठन घोषित किया गया। सभाओं और जुलूसों पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। राष्ट्रीय नेताओं की गिरफ्तारी से तथा सरकार की दमन नीति ने जनता में विद्रोह की भावना पैदा कर दी। जनता ने सरकार की नीति के विरुद्ध विद्रोह का झंडा खड़ा कर दिया। जगह-जगह पर आवागमन के साधनों को तोड़-फोड़ दिया गया। रेलवे और पुलिस थानों को जला दिया गया। छात्रों, दुकानदारों, मजदूरों, और गृहणियों ने सड़को और गलियों में जुलूस निकाला। गांधीजी की जय, गांधी को छोड़ दो और अंग्रेजों भारत छोड़ों के नारों से आकाश गूँज उठा।सरकार ने शांतिपूर्ण जुलूस पर लगी चार्ज किया। एक लाख से अधिक आंदोलनकारी जेल में बंद कर दिए गए। पुरुषों को बड़ी बेरहमी से मारा गया और औरतों की इज्जत लूटी गई। लोगों की सम्पत्ति नष्ट हो गई।

माइकोल ब्रेचर के अनुसार , सरकार का दमन चक्र बहुत कठोर था और क्रांति को दबाने के लिए पुलिस राज्य की स्थापना की गई थी। सरकार के अमानुषिक दमन चक्र ने आंदोलन को दबा तो दिया, किंतु छिपे रूप से आंदोलन चलता रहा जिसका नेतृत्व अरूणा आसफ अली,राममनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण जैसे नेताओं ने किया।

महात्मा गांधी का अनशन

जनता के हिंसात्मक कार्यों और सरकारी दमन से गांधीजी का हृदय चीत्कार उठा। अत: उन्होने आत्म शुद्धि के लिए उपवास शुरू किया। तेरह दिन के बाद गांधीजी की हालत दयनीय हो गई । सरकार ने इस ओर ध्यान नहीं

दिया। किंतु गांधीजी ने सफलतापूर्वक उपवास समाप्त किया। 6 मई, 1944 को गांधीजी को जेल से रिहा कर दिया गया।

याद रखिये कि गांधी जी यह सब हासिल करने में तब कामयाब रहे, जब इलेक्ट्रॉनिक मीडिया व्यावहारिक रूप से न के बराबर था, अधिकाँश भारतीय अनपढ़ थे, और ग्रामीण भारत में – जहां ज्यादातर आबादी रहती थी – संचार और परिवहन की मूलभूत सुविधाओं से भी बहुत थी । आखिर वह यह सब हासिल करने में सफल कैसे रहे? यह उनकी भागीदारी की तकनीक के माध्यम से सम्भव हो सका, उनकी अपील सभी को अपने अभियान के रूप में दिखती थी, ना कि गांधी के व्यक्तिगत अभियान की तरह।

अंग्रेजों भारत छोड़ो' और भारतवासियों को 'करो या मरो' की दी गई ललकार का जो भीषण परिणाम निकला, उसे निहार अंग्रेज न केवल घबरा गए, बल्कि बोरिया बिस्तर बांधकर इस देश से चले जाने के लिए बाध्य हो गए। फलतः 15 अगस्त 1947 के दिन भारत को स्वतंत्र कर अंग्रेज इंग्लैंड लौट गए।

निष्कर्ष

सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धान्तो पर चलकर महात्मा गांधी ने भारत को आजादी दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके इन सिद्धांतों ने पूरी दुनिया में लोगों को नागरिक अधिकारों एवं स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिये प्रेरित किया। उन्हें भारत का राष्ट्रपिता भी कहा जाता है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में निर्णायक भूमिका निभाने वाले भारत छोड़ो आंदोलन ने अंग्रेजी हुकूमत की नींव हिलाने का काम किया था।

सन्दर्भ सूची

[1]. जे. बी. कृपलानी - “आधुनिक भारत क़े निर्माता गाँधी जीवन और दर्शन”

[2]. महात्मा गाँधी - “सत्य क़े साथ मेरे प्रयोग”, “ हिन्द स्वराज”

[3]. bharatdiscovery.org/india/महात्मा_गाँधी

[4]. अनिल मिश्रा – “गाँधी एक अध्ययन”

[5]. Nelson, Dean (7 July 2010). "Ministers to build a new 'special relationship' with India

[6]. क्रान्त, मदनलाल वर्मा (2006), स्वाधीनता संग्राम के क्रान्तिकारी साहित्य का इतिहास 2 (1 सं॰) नई दिल्ली: प्रवीण प्रकाशन प॰ 501 से 503 तक आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 81-7783-120-8